

PGIMER ने विश्व रोगी सुरक्षा दिवस 2026 मनाया, गैर-संचारी रोगों में सुरक्षित उपचार पर रहा विशेष जोर

***“रोगी सुरक्षा की सबसे मजबूत ढाल स्वास्थ्यकर्मों की सतर्क नजर है”: प्रो. विवेक लाल, निदेशक, PGIMER**

“रोगी की सुरक्षा के मामले में स्वास्थ्यकर्मों की सतर्क नजर का कोई विकल्प नहीं हो सकता। तकनीक हमारी सहायता कर सकती है, लेकिन मरीज के पास खड़े होकर उसकी स्थिति पर नजर रखने, सतर्क रहने और चिकित्सकीय निर्णय लेने की मानवीय क्षमता का स्थान नहीं ले सकती,” यह बात PGIMER के निदेशक प्रो. विवेक लाल ने आज PGIMER में विश्व रोगी सुरक्षा दिवस 2026 के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि कही।

एडवांस्ड आई सेंटर, PGIMER के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के संकाय सदस्य, रेजिडेंट डॉक्टर, विद्यार्थी, नर्सिंग स्टाफ तथा अन्य स्वास्थ्यकर्मों शामिल हुए। कार्यक्रम में प्रो. संजय जैन, डीन (अकादमिक्स) एवं अध्यक्ष, इंस्टीट्यूट पेशेंट सेफ्टी कमेटी; प्रो. विजय के. गोनी, कार्यवाहक चिकित्सा अधीक्षक; तथा डॉ. महेश देवानी, नोडल अधिकारी, पेशेंट सेफ्टी, विभागाध्यक्ष, हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन, सहित अन्य विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

प्रो. विवेक लाल ने कहा कि चिकित्सा का पहला सिद्धांत— “किसी को नुकसान न पहुंचाना” —ही रोगी सुरक्षा की मूल भावना है। तकनीक और विभिन्न उपकरणों पर अत्यधिक निर्भरता से सावधान करते हुए उन्होंने कहा, “यदि हम यह मान लें कि केवल AI ही रोगी सुरक्षा सुनिश्चित कर सकता है, तो हम सबसे महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच— सतर्क स्वास्थ्यकर्मों —को नजरअंदाज कर सकते हैं।”

प्रो. लाल ने वर्ष 1986-87 में इंटर्नशिप के दौरान की एक घटना को याद करते हुए बताया कि पंजाब के एक सिविल अस्पताल में बड़ी संख्या में ट्रॉमा मरीजों के पहुंचने की संभावना थी। उस समय एक वरिष्ठ सर्जन ने उन्हें सिखाया था कि “किसी आकस्मिक स्थिति में सबसे पहले तार्किक सोच प्रभावित होती है।” उन्हें आपातकालीन विभाग के बाहर तैनात किया गया था ताकि आने वाले घायलों को सही दिशा में भेजा जा सके।

उन्होंने कहा, “उस दिन मैंने सीखा कि रोगी सुरक्षा में छोटी-छोटी बातें ही अक्सर सबसे बड़ी भूमिका निभाती हैं।”

प्रो. लाल ने 27 वर्षीय एक ट्रॉमा मरीज का उदाहरण देते हुए बताया कि उसके महत्वपूर्ण जीवन संकेत सामान्य और संतोषजनक नजर आ रहे थे, लेकिन वरिष्ठ सर्जन ने मरीज को हो रहे अत्यधिक पसीने पर ध्यान दिया। आगे जांच करने पर उसकी तिल्ली (spleen) फटी हुई पाई गई और समय पर उपचार से मरीज स्वस्थ हो गया।

उन्होंने कहा, “सामान्य रक्तचाप या मॉनिटर पर दिखाई देने वाले संतोषजनक संकेत हमेशा पूरी कहानी नहीं बताते। हमें उन सूक्ष्म संकेतों को पहचानना सीखना होगा।”

रोकथाम की मजबूत संस्कृति विकसित करने का आह्वान करते हुए प्रो. लाल ने कहा, “जो वास्तव में अप्रत्याशित है, वह हमेशा हमारे नियंत्रण में नहीं हो सकता, लेकिन जिसे रोका जा सकता है, उसे हर हाल में रोकना चाहिए।”

उन्होंने कहा कि रोगी सुरक्षा केवल बड़ी चिकित्सकीय प्रक्रियाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि सही प्रिस्क्रिप्शन, मरीज की सही पहचान, स्टेरिलाइज्ड लिनेन, सुरक्षित भोजन, उचित दस्तावेजीकरण, प्रभावी संवाद और सही हैंडओवर जैसी रोजमर्रा की प्रक्रियाएं भी इसका महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

उन्होंने जोर देते हुए कहा, “उचित हैंडओवर अनिवार्य है। रेजिडेंट को मरीज के बेडसाइड तक ले जाएं, उसकी समस्याओं को समझाएं और सुनिश्चित करें कि दी गई जानकारी सही तरह से समझी गई है। स्वास्थ्य सेवा से जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति इस देखभाल व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है।”

समापन पर प्रो. लाल ने कहा, “वार्ड में अपनी सतर्क नजर खुली रखें। रोगी सुरक्षा की सबसे मजबूत परत एक सजग, जिम्मेदार और संवेदनशील स्वास्थ्यकर्मी है।”

इस अवसर पर प्रो. संजय जैन, डीन (अकादमिक्स) एवं अध्यक्ष, इंस्टीट्यूट पेशेंट सेफ्टी कमेटी, ने कहा कि प्रत्येक मरीज अस्पताल में बेहतर होने की उम्मीद के साथ आता है और स्वास्थ्यकर्मियों की जिम्मेदारी है कि उपचार के दौरान अनजाने में मरीज को कोई अतिरिक्त नुकसान न पहुंचे।

उन्होंने कहा, “यदि हम हर बार मरीज को पूरी तरह ठीक नहीं कर सकते, तो कम से कम इतना जरूर सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारी वजह से कोई नई समस्या या बीमारी उत्पन्न न हो। यही रोगी सुरक्षा की मूल भावना है।”

दवाओं की सुरक्षा पर प्रकाश डालते हुए प्रो. जैन ने एक जैसी दिखने और एक जैसे नाम वाली दवाओं (Look-Alike, Sound-Alike Medicines) से जुड़ी एक घटना का उल्लेख किया, जिसमें मरीज को निर्धारित दवा के बजाय दूसरी दवा दी जा रही थी।

उन्होंने कहा, “हमें कभी यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि हम जो कर रहे हैं, वह निश्चित रूप से सही है। हमें अपनी आंखें और कान खुले रखने चाहिए तथा यह सत्यापित करना चाहिए कि मरीज को वास्तव में कौन-सी दवा दी जा रही है।”

प्रो. जैन ने कहा कि रोगी सुरक्षा केवल डॉक्टरों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि इसमें नर्स, तकनीशियन, रेडियोलॉजिस्ट, सपोर्ट स्टाफ तथा मरीज की देखभाल में योगदान देने वाला प्रत्येक व्यक्ति शामिल है।

उन्होंने कहा, “स्वास्थ्य सेवा व्यवस्था अत्यंत जटिल हो चुकी है। रोगी सुरक्षा की जिम्मेदारी किसी एक समूह के भरोसे नहीं छोड़ी जा सकती।”

प्रो. जैन ने कहा कि स्वास्थ्य सेवा की गुणवत्ता का आकलन केवल अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे से नहीं, बल्कि मरीज के गिरने की घटनाओं, दवा संबंधी त्रुटियों, मरीज की सही पहचान तथा सुरक्षित रक्त आधान जैसी बुनियादी व्यवस्थाओं से भी होता है।

उन्होंने कहा, “रोगी सुरक्षा दिवस मनाने का उद्देश्य इन जोखिमों को पहचानना और रोके जा सकने वाले नुकसान को कम करना है। हम सभी को मिलकर मरीजों के लिए ऐसा वातावरण तैयार करना होगा जो अधिक स्वस्थ और सुरक्षित हो, ताकि जो मरीज हमारे पास आए, वह मुस्कुराते हुए घर लौटे।”

डॉ. महेश देवानी, नोडल अधिकारी, पेशेंट सेफ्टी, ने कहा कि सुरक्षित कार्यप्रणालियों को रोजमर्रा की चिकित्सकीय व्यवस्था का अभिन्न हिस्सा बनाना आवश्यक है। उन्होंने कहा, “मानकीकृत प्रक्रियाएं, प्रभावी संवाद, संक्रमण नियंत्रण, दवा सुरक्षा, सुरक्षित सर्जरी और निरंतर निगरानी रोके जा सकने वाले जोखिमों को कम करने तथा भरोसेमंद स्वास्थ्य सेवा व्यवस्था विकसित करने के लिए आवश्यक हैं।”

कार्यक्रम के तकनीकी सत्र में रोगी सुरक्षा के विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं पर विशेषज्ञ व्याख्यान आयोजित किए गए। “Medication Safety and Antimicrobial Resistance” विषय पर प्रो. नुसरत शफीक, फार्माकोलॉजी विभाग ने व्याख्यान दिया। उन्होंने सुरक्षित दवा उपयोग तथा एंटीमाइक्रोबियल दवाओं के जिम्मेदाराना इस्तेमाल के महत्व पर प्रकाश डाला।

इसके बाद “Safe Transfusion Practices” विषय पर डॉ. हरि कृष्ण धवन, ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग ने सत्र लिया। उन्होंने सुरक्षित एवं उपयुक्त रक्त आधान सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक उपायों पर चर्चा की।

“Infection Prevention and Control, and Safe Biomedical Waste Management Practices” विषय पर डॉ. महेश देवानी, हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन विभाग ने संबोधित किया। उन्होंने सुरक्षित स्वास्थ्य सेवा वातावरण बनाए रखने में संक्रमण नियंत्रण की व्यवस्थित व्यवस्थाओं तथा जैव-चिकित्सीय कचरे के जिम्मेदाराना प्रबंधन की भूमिका पर जोर दिया।

कार्यक्रम में आगे “Surgical Safety” विषय पर प्रो. एल. कामन, जनरल सर्जरी विभाग ने व्याख्यान दिया। उन्होंने सर्जिकल उपचार की पूरी प्रक्रिया के दौरान जोखिमों को न्यूनतम करने और मरीज की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उपायों पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का समापन विश्व रोगी सुरक्षा दिवस 2026 की थीम “Safe Care for Noncommunicable Diseases” पर आयोजित पैनल चर्चा के साथ हुआ। चर्चा में गैर-संचारी रोगों की रोकथाम, निदान और

दीर्घकालिक उपचार के दौरान रोगी सुरक्षा से जुड़ी चुनौतियों पर विचार-विमर्श किया गया। विशेषज्ञों ने कहा कि गैर-संचारी रोगों के प्रभावी प्रबंधन के लिए निरंतर और समन्वित देखभाल आवश्यक है।

पैनल चर्चा की अध्यक्षता प्रो. अरुण अग्रवाल, कम्युनिटी मेडिसिन एवं स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ विभाग ने की। पैनल में प्रो. ए. एन. अग्रवाल, पल्मोनरी मेडिसिन विभाग; तथा प्रो. मनीषा बिस्वाल, मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी विभाग शामिल रहीं। प्रो. शंकर प्रिंजा, कम्युनिटी मेडिसिन एवं स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ विभाग ने मॉडरेटर की भूमिका निभाई।

कार्यक्रम में इस बात को रेखांकित किया गया कि रोगी सुरक्षा एक साझा जिम्मेदारी है, जिसके लिए चिकित्सकीय, डायग्नोस्टिक, नर्सिंग, तकनीकी, प्रशासनिक और सपोर्ट सेवाओं के बीच समन्वित प्रयास आवश्यक हैं।

*